J.C. BOSE UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY, YMCA
FARIDABAD
HARYANA
विद्या परम् भूषणम्

संचार

विद्यार्थियों की कलम से...

READY FOREVER

तिथि– भाद्रपद–अश्वनि / शुक्ल पक्ष–कृष्ण पक्ष / एकादशी / संवत 2082 / युगाब्द 5127, अगस्त–सितंबर 2025

शिक्षक दिवस विशेषांक

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

स्वामी विवेकानंद

सावित्रीबाई फुले

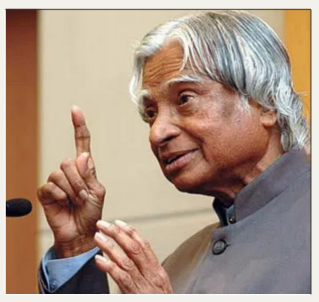

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

मदनमोहन मालवीय

रवींद्रनाथ टैगोर

शिक्षक समाज का वह आधार-स्तंभ है, जो मानव जीवन को ज्ञान, संस्कार और दिशा प्रदान करता है। वे न केवल विद्या के प्रचारक होते हैं, अपितु एक उज्ज्वल भविष्य के निर्माता भी हैं। शिक्षक का महत्व केवल कक्षा की चारदीवारी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज, संस्कृति और राष्ट्र के निर्माण में भी गहन योगदान देता है। शिक्षक वह दीपक है, जो अज्ञानता के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। वे विद्यार्थियों को न केवल पाठ्यपुस्तकों का ज्ञान देते हैं, बल्कि जीवन के मूल्यों, नैतिकता और विवेक को भी सिखाते हैं।

भारत में 5 सितंबर को ही क्यों मनाते हैं शिक्षक दिवस

भारत में प्रत्येक वर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह खास दिन भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति और द्वितीय राष्ट्रपति, महान दार्शनिक, विद्वान और प्रेरक शिक्षक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती को समर्पित है। 5 सितंबर 1888 को मद्रास प्रेसीडेंसी में जन्मे डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षा को जीवन का आधार माना और शिक्षकों को समाज का शिल्पकार बताया। उनके सम्मान में यह दिन शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता और आदर का प्रतीक बन गया है।

कैसे हुई थी इस दिन की शुरुआत?

सन् 1962 में, जब डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत के राष्ट्रपति के रूप में कार्यरत थे, उनका जन्मदिन नजदीक आया। उनके कुछ उत्साही छात्र और शुभचिंतक उनके जन्मदिन को धूमधाम से मनाने की इच्छा लेकर उनसे मिलने पहुंचे। इस अवसर पर डॉ. राधाकृष्णन ने विनम्रता और दूरदर्शिता के साथ सुझाव दिया कि उनके जन्मदिन को व्यक्तिगत उत्सव के बजाय शिक्षकों के सम्मान के लिए समर्पित किया जाए। उनके इस महान विचार ने 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में स्थापित किया।

शिक्षक दिवसः भारत के महान शिक्षकों को नमन

शिक्षक दिवस, शिक्षकों के अमूल्य योगदान को सम्मानित करने का अवसर है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिक्षा को समाज का आधार माना। सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं की शिक्षा के लिए क्रांतिकारी कदम उठाए, भारत में लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोलकर सामाजिक बाधाओं को तोड़ा। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने विज्ञान व प्रेरणादायी शिक्षण से युवाओं को सपनों की उड़ान दी। रवींद्रनाथ टैगोर ने शांति निकेतन के माध्यम से रचनात्मक शिक्षा को बढ़ावा दिया। स्वामी विवेकानंद ने आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा से विश्व में भारतीय दर्शन का परचम लहराया। मदनमोहन मालवीय ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना कर शिक्षा को नया आयाम दिया।

भारत को विश्व गुरु बनाने में शिक्षकों की भूमिका

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है। प्राचीन काल से ही गुरु को ईश्वर से भी ऊपर स्थान दिया गया है, क्योंकि गुरु ही वह सेतु है जो शिष्य को अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाता है। संस्कृत का प्रसिद्ध श्लोक गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।। स्पष्ट करता है कि गुरु सृष्टि के सृजनकर्ता, पालक और संहारक तीनों का प्रतिनिधित्व करता है। गुरु ही जीवन को दिशा देने वाला और शिष्य के व्यक्तित्व का निर्माता होता है। भारतीय इतिहास में गुरु–शिष्य परंपरा का एक गौरवशाली अध्याय है। तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों ने विश्व को ज्ञान का दीपक प्रदान किया।

आचार्य चाणक्य ने चंद्रगुप्त मौर्य जैसे शिष्य को न केवल शिक्षित किया बल्कि उसे राष्ट्र का निर्माता भी बनाया। गुरु द्रोणाचार्य ने अपने शिष्यों को शस्त्रविद्या में पारंगत कर इतिहास रचा। स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस से आध्यात्मिकता का अमृत पाया और उसे विश्वभर में फैलाया। यह दर्शाता है कि एक गुरु केवल ज्ञान ही नहीं देता, बल्कि जीवन जीने की कला, मूल्य और आदर्श भी प्रदान करता है। उपनिषदों व गीता में गुरु के मार्गदर्शन को अनिवार्य बताया गया है। "आचार्य देवो भव" का उद्घोष इस बात की पुष्टि करता है कि शिक्षक का स्थान देवताओं जैसा है। भारतीय दर्शन मानता है कि गुरु के बिना ज्ञान अपूर्ण है, क्योंकि गुरु केवल ग्रंथों का ज्ञान नहीं कराता, बल्कि जीवन की वास्तविकताओं को समझने और उन्हें साधने की शक्ति देता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, उनका मानना था कि शिक्षण केवल पेशा नहीं, बल्कि एक मिशन है।

देवेंद्र गौड, जिला अध्यक्ष, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

शिक्षक दिवसः ज्ञान और प्रेरणा का पर्व

भारत में प्रतिवर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। यह दिन महान दार्शनिक, विद्वान एवं भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस की स्मृति में मनाया जाता है। डॉ. राधाकृष्णन स्वयं एक आदर्श शिक्षक थे जिन्होंने जीवन पर्यंत शिक्षा को समाज सुधार और राष्ट्र निर्माण का सबसे बड़ा साधन माना।

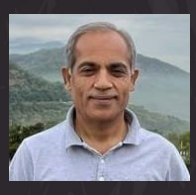

शिक्षक दिवस हमें यह स्मरण दिलाता है कि गुरु पाठ्यपुस्तक का ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि जीवन जीने की कला, मूल्य और नैतिकता भी सिखाते हैं।

एक सच्चा शिक्षक अपने विद्यार्थियों की क्षमताओं को पहचानकर उनमें आत्मविश्वास, अनुशासन और संस्कार भरता है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में गुरु को ईश्वर से भी उच्च स्थान दिया गया है। आज के युग में जब तकनीक तेजी से बदल रही है तब भी शिक्षक की भूमिका और महत्व कम नहीं हुआ है। डिजि. टल युग में गुरु ही वह प्रकाश है जो विद्यार्थियों को सही दिशा में मार्गदर्शन करता है। एक शिक्षक मात्र परीक्षा में अच्छे अंक लाने तक सीमित नहीं रहता अपितु वह अपने विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक और संवेदनशील इंसान बनाने का प्रयास करता है।

यह अवसर हमें यह सोचने पर भी बाध्य करता है कि शिक्षक का योगदान केवल कक्षा तक नहीं बल्कि जीवन भर हमारे साथ रहता है।

शिक्षक राष्ट्र निर्माण के सच्चे शिल्पकार होते हैं। शिक्षक दिवस हमें यह संकल्प दिलाता है कि हम अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन को जीवन में उतारें और उन्हें सच्चा सम्मान दें। वास्तविकता में यही शिक्षक दिवस होता है और इसी तरह मनाना चाहिए।

रविंद्र कुमार मनचंदा
राज्य शिक्षक पुरस्कार प्राप्त

आधुनिक युग में शिक्षकों की बढ़ती चुनौतियां

आधुनिक युग में शिक्षक समाज के शिल्पकार और ज्ञान के प्रकाशवाहक बने हुए हैं, किंतु उनकी राह पहले से कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण हो गई है। तकनीकी प्रगति, बदलते सामाजिक मूल्य, और विद्यार्थियों की नई अपेक्षाएं शिक्षकों के समक्ष अभूतपूर्व बाधाएं प्रस्तुत करती हैं।

इन चुनौतियों का सामना करते हुए शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि समाज को प्रगति के पथ पर ले जाने का दायित्व भी निभाते हैं। तकनीकी अनुकूलन आधुनिक युग की सबसे बड़ी चुनौती है। डिजिटल युग में शिक्षण अब केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहा। ऑनलाइन शिक्षण, डिजिटल उपकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे संसाधनों का उपयोग आज अनिवार्य हो गया है। किंतु, कई शिक्षकों को तकनीकी प्रशिक्षण और संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में। यह उनके लिए एक अतिरिक्त बोझ बन जाता है, क्योंकि उन्हें नई तकनीकों को सीखने के साथ–साथ अपने पारंपरिक शिक्षण को भी संतुलित करना पड़ता है।

विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताएं भी एक प्रमुख चुनौती हैं। आज की पीढ़ी सूचना की प्रचूरता और सोशल मीडिया के प्रभाव में है। उनकी जिज्ञासा और अपेक्षाएं पहले से कहीं अधिक हैं। शिक्षकों को रचनात्मक और वैयक्तिक शिक्षण विधियां अपनानी पड़ती हैं, ताकि प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। साथ ही, विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को एकजुट करना भी एक जटिल कार्य है।

सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दबाव भी शिक्षकों के लिए चुनौती बन रहे हैं। आज के विद्यार्थी तनाव, चिंता, और सोशल मीडिया के दबाव से जूझ रहे हैं। शिक्षकों को न केवल शिक्षक, बल्कि मार्गदर्शक की भूमिका भी निभानी पड़ती है। इसके अतिरिक्त, सीमित संसाधन और बढ़ता कार्यभार उनकी मुश्किलें बढ़ाते हैं।

संचार

विद्यार्थियों की कलम से...

READY FOREVER

Page-02

हरियाली पर्व 4.0: पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक और कदम

प्रदूषण और शहरीकरण से निपटने के लिए पौधरोपण जरूरी: कुलगुरु प्रो. सुशील कुमार तोमर

फरीदाबाद। जे.सी. बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद ने अपने वार्षिक पर्यावरण संरक्षण अभियान हरियाली पर्व 4.0 और एक पेड़ माँ के नाम 2.0 के तहत एक भव्य पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया। विश्वविद्यालय के आवासीय परिसर के आसपास आयोजित इस पहल में कुलपति प्रो. सुशील कुमार तोमर के नेतृत्व में संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. अजय रंगा और सामाजिक कार्यकर्ता जयमाला तोमर ने भी पौधरोपण कर इस अभियान को और सशक्त बनाया। कुलगुरु प्रो. सुशील कुमार तोमर ने इस अवसर पर कहा, बढ़ते प्रदूषण और शहरीकरण के दबाव में प्रकृति को बचाने के लिए पौधरोपण एक अनिवार्य कदम है। यह न केवल पर्यावरण को संतुलित रखता है, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ और हरा–भरा भविष्य सुनिश्चित करता है। उन्होंने सभी से इस तरह के अभियानों में भाग लेने, पेड़ों की देखभाल करने की अपील की। यह कार्यक्रम वसुंधरा इको–क्लब व पर्यावरण विज्ञान विभाग के सहयोग से डीन स्टूडेंट वेलफेयर कार्यालय द्वारा आयोजित किया गया।

विशिष्ट अतिथि जयमाला तोमर ने अपने विचार साझा करते हुए कहा, पेड़ हमारी धरती के फेफड़े हैं। हरियाली पर्व विश्वविद्यालय की एक प्रमुख वार्षिक पहल है, जो पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए शुरू की गई है। यह बेहतरीन प्रयास है।

माँ के नाम समर्पित पौधरोपण

एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत विश्वविद्यालय के आवासीय ब्लॉक की बाहरी परिधि पर मोरिंगा, बेलपत्र और आम जैसे पौधे रोपे गए। कुलसचिव प्रो. अजय रंगा ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा, यह अभियान हमें अपनी माताओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का अवसर देता है, साथ ही पर्यावरण संरक्षण की दिशा में हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

फिल्म निर्माण प्रशिक्षण कार्यशाला में रही सराहनीय भागीदारी

फरीदाबाद। रोहतक में दादा लख्मीचंद (सुपवा) विश्वविद्यालय एवं सिने फाउंडेशन हरियाणा द्वारा फिल्म निर्माण प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें हरियाणा प्रदेश की विभिन्न यूनिवर्सिटी एवं फिल्म निर्माण क्षेत्र से जुड़े फिल्म प्रेमियों ने भाग लिया। कुल 135 में से 31 प्रतिभागियों का चयन उनकी उपलब्धियों के आधार पर किया गया। जिसमें राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पांच फिल्म पुरुस्कार विजेता जे.सी.बोस विश्वविद्यालय के मीडिया विद्यार्थी धीरेन सिंह का भी चयन हुआ। गत 19 से 23 अगस्त तक चली इस कार्यशाला में फिल्म निर्देशन, कहानी लेखन, पटकथा लेखन, संवाद लेखन, फिल्म संपादन जैसी विधाओं में अपनी दक्षता को निखारने और नई तकनीक के उपयोग की बारीकियां जानने और सीखने का अवसर मिला।

फिल्म निर्माण प्रशिक्षण कार्यशाला में भागीदारी कर लौटे जे.सी.बोस विश्वविद्यालय के मीडिया विद्यार्थी धीरेन सिंह ने मीडिया विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ.पवन सिंह से मिलकर अपने अनुभव साझा किए और इस सुअवसर के लिए उनका विशेष धन्यवाद व्यक्त किया। विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ.पवन सिंह ने बताया कि रोहतक में सुपवा में आयोजित इस कार्यशाला में फिल्म निर्माण क्षेत्र की ख्याति प्राप्त शख्सियत जैसे पवन मल्होत्रा, सुदीप्तो सेन, अतुल गंगवार, अनूप लाठर, राकेश योगी, हरिओम कौशिक, विकास बैरवाल और रोहित भारद्वाज शामिल रहे। जिन्होंने अपने अनुभव को प्रतिभागियों को बताया। कुलगुरु प्रो.सुशील कुमार तोमर ने अपने बधाई संदेश में कहा कि किसी भी तरह की कार्यशाला में थ्योरी के साथ साथ व्यावहारिक ज्ञान मिलता है जो भविष्य में बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

रोहतक में कार्यशाला में भागीदारी कर लौटे मीडिया विद्यार्थी धीरेन सिंह ने बताया कि सुपवा एवं सिने फाउंडेशन द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में बहुत कुछ सीखने को मिला। फिल्म निर्माण संबंधित तमाम ज्ञानवर्धक जानकारी बहुत ही सरल माध्यम से बताई गयी। समापन समारोह में उत्कृष्ट कार्य के लिए सुपवा कुलगुरु डॉ.अमित आर्य द्वारा पुरस्कृत किया गया। सभी प्रतिभागियों को सर्टिफिकेट प्रदान कर प्रोत्साहित भी किया गया।

विश्वविद्यालय में वोकल फॉर लोकल थीम पर मनाया विश्व उद्यमिता दिवस

फरीदाबाद। जे.सी. बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद ने विश्व उद्यमिता दिवस 2025 को "वोकल फॉर लोकल" थीम के साथ धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर एक पिच चैलेंज बिजनेस आइडिया प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम को विश्वविद्यालय की संस्थान नवाचार परिषद (आईआईसी) और आईपीआर, नवाचार, व इनक्यूबेशन स्टार्ट–अप डिवीजन ने संयुक्त रूप से आयोजित किया। इसका उद्देश्य छात्रों में उद्यमशीलता की भावना को प्रज्वलित करना था।

मुख्य अतिथि के रूप में बोनी पॉलिमर्स के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक तथा विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र राज भाटिया उपस्थित रहे। अन्य प्रमुख वक्ताओं में ओडब्ल्यूएल सिस्टम्स सॉल्यूशंस के मुख्य परिचालन अधिकारी पंकज मुंजाल, कापायो सॉल्यूशंस के निदेशक योगेंद्र पाल सिंह, और विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. अजय रंगा शामिल थे। प्रबंधन डीन अकादमिक प्रो. अतुल मिश्रा भी इस

आयोजन में मौजूद रहे।

कुलगुरु प्रो. सुशील कुमार तोमर ने अपने संबोधन में उद्यमशीलता और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय की दृढ़ प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय का बिजनेस टेक्नोलॉजी इनक्यूबेटर नवोदित उद्यमियों को संसाधन, मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करता है। उन्होंने छात्रों से नवाचार के माध्यम से देश की आर्थिक प्रगति में योगदान देने का आह्वान किया।

इंजीनियरिंग छात्रों के लिए प्रेरण कार्यक्रम शुरू

जे.सी. बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, फरीदाबाद ने शैक्षणिक सत्र 2025–26 में प्रवेश लेने वाले इंजीनियरिंग छात्रों के लिए 25 अगस्त से 5 सितंबर तक दो सप्ताह का प्रेरण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को विश्वविद्यालय के शैक्षिक और सांस्कृतिक परिवेश से जोड़ना है। कार्यक्रम का शुभारंभ कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल के पूर्व कुलपति प्रो. बी.एस. राजपूत ने दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. एसके तोमर, डीन प्रो. मुनीश वशिष्ठ, प्रो. राज कुमार, प्रो. प्रदीप डिमरी, प्रो. संदीप ग्रोवर, प्रो. पी. आर. शर्मा, और अन्य विभागाध्यक्ष मौजूद रहे। कुलपति प्रो. तोमर ने नए छात्रों का स्वागत करते हुए उन्हें विश्वविद्यालय के संसाधनों का उपयोग कर नवाचार के माध्यम से समाज की भलाई के लिए कार्य करने को प्रेरित किया।

तनाव कम करने की व्यावहारिक रणनीतियां साझा की

फरीदाबाद। जे.सी. बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद के चिकित्सा केंद्र ने मेट्रो अस्पताल के सहयोग से एक स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया। इस शिविर का उद्देश्य विद्यार्थियों और कर्मचारियों को मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना था।

तनाव प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान

शिविर का संचालन मेट्रो अस्पताल के विशेषज्ञों, मनोचिकित्सक डॉ. विदुर आर्य, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रियंका और स्टाफ द्वारा किया गया। विश्वविद्यालय के चिकित्सा अधिकारी डॉ. अंकुर शर्मा की देखरेख में आयोजित इस कार्यक्रम में तनाव प्रबंधन पर एक विशेष सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र में विद्यार्थियों को शैक्षणिक और व्यक्तिगत जीवन में तनाव से निपटने की चुनौतियों और समाधानों पर चर्चा की गई।डॉ. विदुर आर्य ने तनाव के प्रारंभिक लक्षणों जैसे चिंता, चिड़चिड़ापन और एकाग्रता में कमी को पहचानने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने माइंडफुलनेस, समय प्रबंधन, नियमित व्यायाम और आवश्यकता पड़ने पर पेशेवर सहायता लेने जैसे व्यावहारिक उपाय सुझाए। साथ ही, मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े मिथकों को तोड़ने और खुलकर बात करने की आवश्यकता पर बल दिया। सत्र में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने अनुभव साझा किए।

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच और महिला स्वास्थ्य पर परामर्श

शिविर में समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य जांच की सुविधा भी उपलब्ध थी। इसमें रक्तचाप, ब्लड शुगर और ईसीजी जैसे परीक्षण शामिल थे। डॉ. प्रियंका ने छात्राओं और महिला कर्मचारियों को महिला स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों पर व्यक्तिगत परामर्श प्रदान किया।

J.C. BOSE UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY, YMCA
FARIDABAD
HARYANA
विद्या परम् भूषणम्

संचार

विद्यार्थियों की कलम से...

READY FOREVER

हिंदी दिवस विशेषांक

हिंदी दिवस केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि एक संकल्प है, हमारी भाषा को जीवंत रखने, उसे समृद्ध करने और इसे विश्व पटल पर गौरव प्रदान करने का। आइए, इस हिंदी दिवस पर हम यह प्रण लें कि हम हिंदी को न केवल बोलेंगे, बल्कि इसे अपने विचारों, कार्यों और जीवन में उतारेंगे। हिंदी हमारी भाषा है, हमारी पहचान है, और इसे संरक्षित करना हमारा कर्तव्य है। हिंदी भाषा भारत की आत्मा है, जो सदियों से सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय एकता का माध्यम बनी हुई है। यह इंडो–आर्यन भाषा परिवार की सदस्य है और विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। हिंदी न केवल भारत की आधिकारिक भाषा है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान बना रही है। इस लेख में हम हिंदी की उत्पत्ति, विकास, साहित्य, वैश्विक स्थिति, आंकड़ों और चुनौतियों पर गंभीरता से चर्चा करेंगे।

हिंदी बोलो, लिखो और जीयो

हिंदी दिवस का उत्सव 14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को देवनागरी लिपि में संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने की याद में मनाया जाता है। संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत हिंदी को अंग्रेजी के साथ आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया गया। हालांकि, पहली बार हिंदी दिवस 1953 में राष्ट्रीय भाषा प्रचार समिति की सिफारिश पर मनाया गया। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करने के साथ सरकारी कार्यों, शिक्षा और मीडिया में उसके उपयोग को बढ़ावा देना तथा युवा पीढ़ी को मातृभाषा से जोड़ना है। यह दिन भाषाई विविधता का सम्मान करते हुए राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का माध्यम भी है।

हिंदी की वैश्विक उपस्थिति
डॉ नौटियाल का शोध

हिंदी भाषा ने वैश्विक मंच पर अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज की है। यह न केवल भारत की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान का प्रतीक है, बल्कि विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा के रूप में भी उभरी है। इस उपलब्धि में हिंदी पर विशेष शोध करने वाले डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल के अध्ययन का महत्वपूर्ण योगदान है। जिन्होंने हिंदी की वैश्विक स्थिति को सिद्ध किया। डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल ने एक वैश्विक वेबिनार में अपनी शोध यात्रा साझा की। उन्होंने बताया कि जब उन्होंने 1997 में अपना शोध शुरू किया, तब हिंदी को विश्व में तीसरे या चौथे स्थान की भाषा माना जाता था। लेकिन उनकी रिपोर्ट, जो भारत सरकार के राजभाषा विभाग की पत्रिका राजभाषा भारती (अक्टूबर–दिसंबर 1997) में प्रकाशित हुई, ने सिद्ध किया कि हिंदी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। इस खुलासे ने वैश्विक समुदाय को आश्चर्यचकित कर दिया। हालांकि, भारत सरकार और वैश्विक स्तर पर इसकी स्वीकृति में चार दशक लगे।

आओ हिंदी को व्यापार व व्यवहार की भाषा के रूप में चुनें

भाषा, जन की अभिव्यक्ति के साथ–साथ जन आकांक्षाओं के अतिरिक्त जन की संस्कृति, सभ्यता तथा स्वत्व का बोध भी करवाती है। भाषा की शक्ति शब्द होता है यानि शब्द की शक्ति ही भाषा की अभिव्यक्ति व शक्ति कही जाती है। शब्द का अपना महत्व होता है। महत्व के साथ–साथ उसके बोलने वाले जन का इतिहास, संस्कृति व सभ्यता भी होती है। यही शब्द की वास्तविक शक्ति होती है। यदि शब्द मरता है तो निश्चित भाषा ही नहीं मरती अपितु उसके साथ–साथ उस जन के बोलने की संस्कृति व सभ्यता का भी ह्रास होता है। भारत में बहुजन की भाषा हिंदी है, जिसकी लिपि देवनागरी है ,जो पूर्णतः वैज्ञानिक व जन स्वर – तंत्र के अनुकूल है। इतना ही नहीं हिंदी की देवनागरी लिपि शरीर विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान से भी गहन संबंध रखती है। यह बहुसंख्य समाज की भाषा के साथ–साथ विदेश में भी अपनी सहजता, सरलता और मधुरता के कारण लोकप्रिय भाषा के रूप में अपनाई जा रही है। जिसका अध्ययन विश्व के अनेकों विश्वविद्यालय करवा रहे हैं । हिंदी भाषा का उज्ज्वल भविष्य स्वर्ण अक्षरों में लिखा प्रतीत हो रहा है। बस इसके लिए आपको इस अवसर पर संकल्प करने मात्र की आवश्यकता है।

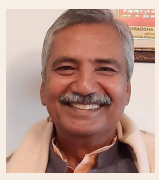

आओ निसंकोच हिंदी भाषा को अपने अपने दैनिक कार्य, व्यापार और व्यवहार की भाषा के रूप में स्वीकार करें।

डॉ वेद प्रकाश व्यथित
वरिष्ठ लेखक एवं साहित्यकार

एआई ने बढ़ाई हिंदी की लोकप्रियता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने डिजिटल युग में हिंदी भाषा को युवाओं के बीच अत्यधिक लोकप्रिय बनाया है। भारत के युवा, जो तकनीक के साथ सहज हैं, अब हिंदी को डिजिटल मंचों पर उत्साहपूर्वक अपना रहे हैं। इसके पीछे कृत्रिम बुद्धिमत्ता की शक्ति है। युवा अब सामाजिक मंचों पर हिंदी में लेख, चित्र और वीडियो बनाते हैं, जिन्हें एआई– आधारित प्रणालियां लाखों तक पहुँचाती हैं। हिंदी गीत, सिनेमा और साहित्य को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के व्यक्तिगत सुझावों ने लोकप्रिय बनाया है।

तकनीकी सरलता और हिंदी

एआई आधारित आवाज सहायक और संवाद प्रणालियां हिंदी में बातचीत करती हैं, जिससे युवा तकनीक को अपनी मातृभाषा में उपयोग करते हैं। ऑनलाइन शिक्षा में हिंदी की मांग बढ़ी है। शैक्षिक मंच हिंदी में पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, जिससे 2025 में 40 फीसदी युवा शिक्षार्थी हिंदी सामग्री का उपयोग कर रहे हैं। एआई ने हिंदी साहित्य और कविताओं को डिजिटल रूप में पुनर्जनन किया है। आवाज–से–पाठ तकनीक ने प्रेमचंद और निराला की रचनाओं को श्रव्य पुस्तकों के रूप में युवाओं तक पहुँचाया। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हिंदी को युवाओं के लिए आकर्षक और सुलभ बनाया है। 2025 में, 60 करोड़ से अधिक हिंदी बोलने वालों में युवा सबसे बड़ा हिस्सा हैं। हिंदी को अपनाकर युवा गर्व के साथ जी रहे हैं।

क्यों हो रहे है भाषा आंदोलन?

भारत जैसे बहुभाषी देश में भाषा हमेशा से राजनीतिक और सांस्कृतिक विवाद का विषय रही है। हिंदी को राष्ट्रीय भाषा बनाने के प्रयासों ने प्रो–हिंदी और एंटी–हिंदी आंदोलनों को जन्म दिया। 1860 के दशक से हिंदी आंदोलन शुरू हुआ, जिसमें याचिकाओं, साहित्यिक कार्यों और संगठनों के माध्यम से हिंदी को राष्ट्रीय भाषा बनाने की मांग की गई। यह आंदोलन हिंदू राष्ट्रवाद से जुड़ा था और स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बना। दूसरी ओर, गैर–हिंदी भाषी राज्यों, विशेष रूप से दक्षिण भारत में, हिंदी थोपने के खिलाफ आंदोलन हुए।

1937 से एंटी–हिंदी आंदोलन शुरू हुआ

तमिलनाडु में 1937 से एंटी–हिंदी आंदोलन शुरू हुआ, जब मद्रास प्रेसिडेंसी में स्कूलों में हिंदी को अनिवार्य बनाया गया। इसका कारण सांस्कृतिक प्रभुत्व का डर, नौकरियों और परीक्षाओं में असमानता, तथा स्थानीय भाषाओं का ह्रास रहा। 1960 के दशक में यह आंदोलन चरम पर पहुंचा, जिसके परिणाम स्वरूप हिंदी को एकमात्र आधिकारिक भाषा बनाने का विचार त्याग दिया गया।

2025 में, हिंदी थोपने की बहस जारी

उत्तरी भारत में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए आंदोलन हो रहे हैं, जबकि दक्षिणी राज्य जैसे तमिलनाडु में विरोध हो रहा है। कारण है डिजिटल युग में हिंदी का बढ़ता प्रभाव (बॉलीवुड, मीडिया), लेकिन गैर–हिंदी क्षेत्रों में भाषाई असमानता। आंदोलनों की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि भाषा पहचान से जुड़ी है।

अन्य भाषा जरूरत,मगर हिंदी पहचान

जिस भाषा में माँ पहली बार "बेटा" कहती है, वह भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि हमारी भावनाओं की धड़कन है। जब कोई बच्चा पहली बार बोलना सीखता है, तो उसकी जुबान पर जो शब्द आते हैं, वे किसी किताब से नहीं, बल्कि माँ की लोरी से आते हैं। वह भाषा, जो हमें पहली मुस्कान के साथ जीवन का पहला शब्द देती है, वही हमारी असली पहचान है। हमारे लिए वह भाषा हिंदी है।

14 सितंबर 1949 को जब हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला, तब केवल एक भाषा को मान्यता नहीं दी गई, बल्कि करोड़ों भारतीयों की आत्मा को सम्मान मिला। आज की दौड़ती–भागती दुनिया में हम अक्सर आधुनिकता के नाम पर अपनी भाषा से दूर होते जा रहे हैं। अंग्रेजी में बोलना हमें शान लगता है और हिंदी बोलते हुए कई बार हम झिझक महसूस करते हैं। पर जरा सोचिए, जिस भाषा में माँ हमें दुलारती है, क्या उस भाषा से शर्माना सही है? मुंशी प्रेमचंद, रवींद्रनाथ टैगोर, शरतचंद चट्टोपाध्याय, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जैसे महान कवियों और साहित्यकारों ने हिंदी की आराधना कर ,विश्व पटल पर हिंदी को ख्याति प्राप्त करवाई है । हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अगर हम अपनी भाषा को भूलेंगे, तो अपनी जड़ों से भी कट जाएंगे। हिंदी दिवस हमें यह याद दिलाता है कि आधुनिक बनना बुरा नहीं, पर अपनी मिट्टी की खुशबू से दूर होना हमें खोखला कर देगा।

साहिल कौशिक
मीडिया विभाग, स्नातकोत्तर विद्यार्थी

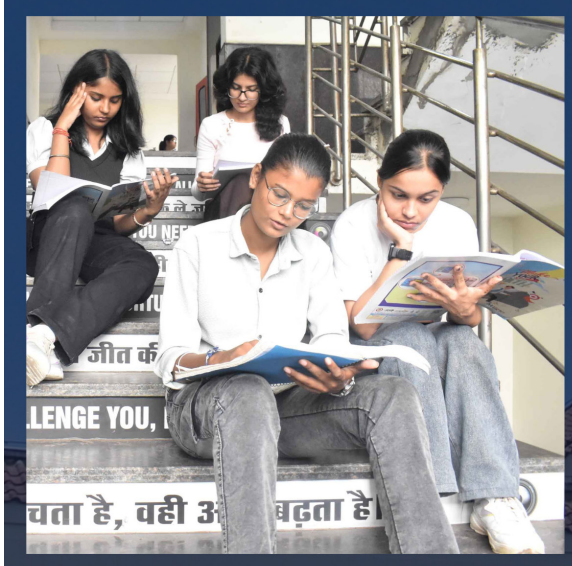

Campus Vibes

J.C. BOSE UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY, YMCA, FARIDABAD (HARYANA)

Accredited 'A+' Grade by NAAC, State Government University

Developed by students of CMT for Practical Training Purpose. Patron- Prof. Sushil Kumar Tomar, Co-Patron Prof Anuradha Sharma, Prof. Pawan Singh. Editorial Team- Anju Singh, Dushyant Tyagi, Student Fraternity- Sahil Kaushik, Simran Maurya, Dhiren Singh, Hardik Gautam, Jivesh Mattoo. Special Thanks: Jitender Singh Yadav (PRO, JCBUST)